भारतीय शिक्षण मंडल

शेषाद्रि सदन, तुलसीबाग मार्ग, महल, नागपुर-440032
+91 712 2721322 bsmbharat1@gmail.com www.bsmbharat.org
www.facebook.com/bsmbharat/ @bsm_bharat www.youtube.com/c/BSMBharat

विकसित भारत: 'स्व-बोध' - उठो और जागो
(स्वामी विवेकानंद जी की दृष्टि में)
लेख लेखन प्रतियोगिता

1. प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद जी भारतीय युवाशक्ति के लिए केवल एक महान संत या विचारक ही नहीं, बल्कि **आत्मविश्वास, राष्ट्रबोध, स्व-बोध, चरित्र निर्माण और कर्मयोग** के प्रतीक हैं। राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी) उनके विचारों के माध्यम से युवाओं में **राष्ट्रनिर्माण की चेतना** जगाने का एक सार्थक अवसर है।

भारतीय शिक्षण मंडल (BSM), जो विगत दशकों से **भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्य-आधारित शिक्षा एवं युवा जागरण** के क्षेत्र में सक्रिय है, अपनी **युवा गतिविधि** के माध्यम से इस अवसर पर एक **लेख लेखन प्रतियोगिता** आयोजित करने का प्रस्ताव प्रस्तुत करता है।

---

2. आयोजन के उद्देश्य

इस लेख लेखन प्रतियोगिता के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- स्वामी विवेकानंद जी के विचारों, दृष्टि एवं संदेश के माध्यम से युवाओं में **स्व-बोध (आत्मचेतना)** का जागरण करना तथा उन्हें आत्मपरिचय से सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना की ओर प्रेरित करना।
- युवाओं में **विकसित भारत** की संकल्पना को स्वामी विवेकानंद जी के विचारों के आलोक में **आत्मबोध-आधारित समझ** के रूप में विकसित करना, जिससे वे अपने विचारों को सार्थक रूप से अभिव्यक्त कर सकें।
- राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में युवाओं की **भूमिका, उत्तरदायित्व एवं नेतृत्व-बोध** को स्व-चेतना एवं आत्मविश्वास के माध्यम से सुदृढ़ करना।
- युवाओं को **लेखन, चिंतन एवं तार्किक अभिव्यक्ति** के लिए एक ऐसा अनुशासित एवं सार्थक मंच प्रदान करना।
- युवाओं में **सकारात्मक, रचनात्मक, राष्ट्रहितकारी एवं मूल्य-आधारित सोच** का विकास करना, जो स्व-बोध से प्रेरित होकर सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों से जुड़े।

---

3. विषय (Themes)

प्रस्तुत विषय एवं उप-विषय **मार्गदर्शक स्वरूप** हैं। प्रतिभागी इनमें से किसी एक विषय पर अथवा **स्वामी विवेकानंद जी के जीवन, पत्रों, भाषणों या विचारों से जुड़े किसी अन्य राष्ट्र-प्रेरक एवं मूल्य-आधारित विषय** पर लेख प्रस्तुत कर सकते हैं, बशर्ते लेख प्रतियोगिता की मूल वैचारिक थीम से संबद्ध हो। इसके अतिरिक्त, **स्वामी विवेकानंद जी के विचारों के आलोक में पंच परिवर्तन**—सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी, कुटुंब प्रबोधन एवं नागरिक कर्तव्य—से संबंधित विषयों पर आधारित लेख भी इस प्रतियोगिता में स्वीकार किए जाएंगे।

1. विकसित भारत और युवाओं की भूमिका: स्वामी विवेकानंद जी के विचारों के आलोक में

उप-विषय:

- स्वामी विवेकानंद जी की दृष्टि में भारत के विकास में युवाओं की भूमिका
- शिक्षा और कौशल के माध्यम से राष्ट्रनिर्माण : विवेकानंद जी का दृष्टिकोण
- स्थानीय प्रयास और वैश्विक पहचान : युवाशक्ति पर विवेकानंद जी का विश्वास
- तकनीकी युग में युवा और उद्यमिता : विवेकानंद जी के आदर्शों की प्रासंगिकता
- ग्राम और शहर के संतुलित विकास में युवाओं की सामाजिक जिम्मेदारी

---

2. स्वामी विवेकानंद जी के आदर्श और आज का युवा

उप-विषय:

- "उठो, जागो" का संदेश और आज के युवा की वास्तविक चुनौतियाँ
- आत्मविश्वास और चरित्र निर्माण में स्वामी विवेकानंद जी के विचार
- मानसिक दृढ़ता और आत्मबल : विवेकानंद जी का युवाओं को संदेश
- विद्यार्थी जीवन में स्वामी विवेकानंद जी के आदर्शों का व्यवहारिक महत्व
- चरित्र बनाम आजीविका : स्वामी विवेकानंद जी का युवा-दर्शन

---

3. आत्मनिर्भर और सशक्त भारत: स्वामी विवेकानंद जी से प्रेरणा

उप-विषय:

- आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा और स्वामी विवेकानंद जी
- शिक्षा को आत्मनिर्भरता का आधार मानने का विवेकानंद जी का विचार
- स्वदेशी और स्वाभिमान की चेतना : विवेकानंद जी का राष्ट्रबोध
- सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में विवेकानंद जी की प्रेरणा
- भारत को विश्वपटल पर स्थापित करने का विवेकानंद जी का सपना

---

4. राष्ट्रनिर्माण में युवाशक्ति: स्वामी विवेकानंद जी की दृष्टि

उप-विषय:

- विवेकानंद जी की अपेक्षा : जागरूक, अनुशासित और निर्भीक युवा
- नेतृत्व क्षमता के विकास में विवेकानंद जी का मार्गदर्शन
- सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता में युवाओं की भूमिका
- सेवा और त्याग को राष्ट्रभाव से जोड़ने की विवेकानंद जी की सोच
- भविष्य के भारत की कल्पना : विवेकानंद जी की दृष्टि में युवा

---

5. स्वामी विवेकानंद जी और नारी सशक्तिकरण

उप-विषय:

- विवेकानंद जी के विचारों में नारी का सम्मान और स्थान
- नारी शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण का आधार मानने की विवेकानंद जी की सोच
- आत्मविश्वास और स्वावलंबन : विवेकानंद जी की दृष्टि में नारी शक्ति
- विकसित भारत में महिलाओं की सक्रिय भूमिका
- आधुनिक भारतीय नारी और विवेकानंद जी का राष्ट्रदर्शन

---

6. स्वामी विवेकानंद जी के पत्रों के आलोक में

उप-विषय:

- विवेकानंद जी के पत्रों में राष्ट्रचिंतन
- युवाओं को लेकर विवेकानंद जी की चिंता और अपेक्षाएँ
- शिक्षा, सेवा और संगठन पर विवेकानंद जी के विचार
- भारतीय समाज की कमजोरियों पर विवेकानंद जी की स्पष्ट दृष्टि
- आत्मबल और आत्मनिर्भरता का संदेश : विवेकानंद जी के पत्र

---

7. स्वामी विवेकानंद जी के भाषण और उनका प्रभाव

उप-विषय:

- शिकागो धर्म महासभा (1893) और भारत की वैश्विक पहचान
- “उठो, जागो” : विवेकानंद जी का युवाओं के लिए आह्वान
- मानवता और विश्वबंधुत्व का संदेश : विवेकानंद जी के विचार
- शिक्षा और चरित्र निर्माण पर विवेकानंद जी के भाषण

- राष्ट्रनिर्माण का विचार : विवेकानंद जी के व्याख्यानों के संदर्भ में

---

8. स्वामी विवेकानंद जी का समग्र दृष्टिकोण : सेवा, शिक्षा और समाज

उप-विषय:

- 'दरिद्र नारायण' की अवधारणा और सेवा का भाव
- सेवा को साधना मानने की विवेकानंद जी की दृष्टि
- सामाजिक न्याय और समरसता पर विवेकानंद जी के विचार
- संगठन और राष्ट्रभाव का समन्वय
- आज के समय में स्वामी विवेकानंद जी की प्रासंगिकता

---

9. स्व-बोध और स्वदेशी चेतना: विवेकानंद जी के विचार

उप-विषय:

- विवेकानंद जी के विचारों में 'स्व-बोध' का अर्थ
- आत्मबोध से स्वावलंबन की यात्रा
- स्वदेशी श्रम और उत्पादन का महत्व
- परावलंबन की मानसिकता पर विवेकानंद जी की चेतावनी
- आज के भारत में स्व-बोध और स्वदेशी चेतना

---

4. आयोजन का स्वरूप

- **आयोजन का नाम:** *राष्ट्रीय युवा दिवस – स्वामी विवेकानंद जयंती विशेष लेख लेखन प्रतियोगिता*
- **तिथि:** 12 जनवरी
    - प्रतिभागी वर्ग: महाविद्यालय / विश्वविद्यालय स्तर - स्नातक (U.G.), स्नातकोत्तर (P.G.), पीएचडी (PhD) एवं युवा शिक्षक
- **माध्यम:** ऑनलाइन

---

5. भूमिकाएँ

युवा गतिविधि, भारतीय शिक्षण मंडल

- आयोजन की संकल्पना एवं वैचारिक रूपरेखा
- लेख के विषयों का प्रारूप एवं शैक्षणिक मार्गदर्शन

- शैक्षणिक संस्थानों से समन्वय
- लेखों का संकलन एवं मूल्यांकन प्रक्रिया
- आयोजन का समग्र शैक्षणिक संचालन
- युवाओं तक व्यापक पहुँच हेतु सहयोग
- प्रमाण-पत्र / पुरस्कार / प्रोत्साहन में सहयोग
- युवाओं के साथ संवाद एवं जुड़ाव

---

6. अपेक्षित परिणाम

- युवाओं में **स्व-बोध, आत्मचेतना एवं आत्मविश्वास** का विकास, जिसके माध्यम से वे *विकसित भारत* की अवधारणा को वैचारिक रूप से समझ सकें।
- स्वामी विवेकानंद जी के विचारों, संदेशों एवं जीवन-दृष्टि का **समकालीन संदर्भ में बौद्धिक प्रसार**, विशेष रूप से युवाओं के चिंतन और लेखन के माध्यम से।
- युवाओं में **राष्ट्रनिष्ठा, उत्तरदायित्व-बोध और नेतृत्व क्षमता** का सुदृढ़ीकरण, जो आत्मबोध से सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना की ओर ले जाए।
- लेखन और चिंतन के माध्यम से युवाओं में **स्वावलंबी, सकारात्मक एवं मूल्य-आधारित दृष्टिकोण** का विकास।
- सरकार तथा सामाजिक-शैक्षणिक संस्थाओं के बीच **सार्थक, वैचारिक एवं सहयोगात्मक सहभागिता** का एक प्रभावी उदाहरण स्थापित होना।

7. लेख लेखन प्रतियोगिता हेतु दिशा-निर्देश

- **विषय चयन एवं सीमा**
  प्रतिभागी घोषित मुख्य विषयों एवं उनके उप-विषयों में से किसी **एक विषय** पर ही लेख प्रस्तुत करेंगे।
  लेखन चयनित विषय की वैचारिक सीमा के भीतर होना चाहिए।
- **शब्द-सीमा**
  प्रस्तुत लेख की शब्द-सीमा **न्यूनतम 500 शब्द एवं अधिकतम 750 शब्द** होगी।
  निर्धारित शब्द-सीमा से कम या अधिक लेख स्वीकार्य नहीं होंगे।
- **स्वामी विवेकानंद जी के विचारों का संदर्भ**
  लेख में **स्वामी विवेकानंद जी के किसी प्रमाणिक पत्र, भाषण अथवा कथन** का
  संदर्भ भावार्थ सहित प्रस्तुत करना **वांछनीय** होगा।
- **लेखन शैली एवं दृष्टि**
  लेखन **विश्लेषणात्मक, विचारप्रधान एवं लेखात्मक शैली** में हो।
  भाषणात्मक, नारा-प्रधान अथवा भावुक अतिशयोक्ति से बचा जाए।
- **मौलिकता एवं प्रामाणिकता**
  प्रस्तुत लेख **पूर्णतः मौलिक** होना चाहिए।
  किसी भी प्रकार की नकल, आंशिक प्रतिलिपि या अप्रमाणिक सामग्री स्वीकार्य नहीं होगी।
- **भाषा, प्रस्तुति एवं निष्कर्ष**
  भाषा **सरल, शुद्ध, संतुलित एवं प्रवाहपूर्ण** हो।
  लेख में स्वामी विवेकानंद जी के विचारों को **विकसित भारत** के व्यापक संदर्भ से जोड़ते हुए
  एक **सुसंगत एवं सार्थक निष्कर्ष** प्रस्तुत किया जाए

8. पुरस्कार एवं प्रकाशन

इस लेख लेखन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के लेखों का मूल्यांकन निर्धारित मापदंडों के आधार पर किया जाएगा। मूल्यांकन उपरांत चयनित प्रतिभागियों को उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए सम्मानित किया जाएगा।

- प्रतियोगिता में **प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान** प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को क्रमशः **प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार** प्रदान किए जाएंगे।
- इसके अतिरिक्त, निर्णायक मंडल द्वारा चयनित **उत्कृष्ट लेखों का प्रकाशन** किया जाएगा, जिससे प्रतिभागियों को उनके विचारों एवं लेखन को व्यापक मंच प्राप्त हो सके।
- प्रकाशित लेखों के माध्यम से स्वामी विवेकानंद जी के विचारों तथा विकसित भारत की संकल्पना को युवाओं के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाएगा।

9. निष्कर्ष

भारतीय शिक्षण मंडल, **युवा गतिविधि** यह दृढ़ अपेक्षा करता है कि यह आयोजन राष्ट्रीय युवा दिवस को केवल एक औपचारिक कार्यक्रम तक सीमित न रखते हुए, युवाओं में **स्व-बोध (आत्मचेतना)** के जागरण का एक प्रभावी माध्यम बनेगा। स्वामी विवेकानंद जी के विचारों के आलोक में यह पहल युवाओं को आत्मपरिचय से सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रनिर्माण की दिशा में प्रेरित करेगी। यह लेख लेखन प्रतियोगिता युवाओं के चिंतन, लेखन और आत्ममंथन के माध्यम से **विकसित भारत** की संकल्पना को वैचारिक आधार प्रदान करते हुए उन्हें जागरूक, आत्मविश्वासी और उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित करने में सहायक होगी। इस प्रकार यह आयोजन एक **वैचारिक, प्रेरणादायी एवं राष्ट्रनिर्माण-उन्मुख पहल** के रूप में अपनी सार्थक भूमिका स्थापित करेगा।

सादर,

युवा गतिविधि
भारतीय शिक्षण मंडल